

**पवर्ग** पुं. (तत्.) हिंदी वर्णमाला में स्पर्श व्यंजनों का पाँचवा वर्ग जिसमें प, फ, ब, भ, म, ये पाँच वर्ण हैं अर्थात् वर्णमाला के 'प' से 'म' तक के पाँच वर्ण।

**पवॉर** पुं. (देश.) दे. परमार।

**पवॉरना** स.क्रि. (देश.) फेंकना, गिराना, फैलाना 2. खेत में छिड़क कर या छितराकर बीज बोना।

**पवॉरी** स्त्री. (देश.) लोहारों का लोहा छेदने का एक आला।

**पवाका** स्त्री. (तत्.) 'बवंडर'।

**पवि** पुं. (तत्.) 1. वज्र 2. आसमान से गिरने वाली बिजली, गाज 3. अग्नि।

**पवित्र** वि. (तत्.) 1. जो गंदा या मैला न हो, शुद्ध 2. पावन, पुनीत 3. निर्मल, स्वच्छ पुं. (तत्.) अंगुली में पहनी जाने वाली कुश की बनी मुद्रिका जो धार्मिक अनुष्ठानों, पूजा-पाठों, यज्ञ-हवन में पहनी जाती है।

**पवित्रक** पुं. (तत्.) 1. कुशा 2. दमनक का पौधा 3. पीपल का पेड़ 4. गूलर का पेड़ 5. क्षत्रिय का जनेऊ, यज्ञोपवीत।

**पवित्रता** स्त्री. (तत्.) 1. पवित्र होने या शुद्ध होने का भाव 2. शुद्धि, स्वच्छता, पावनता।

**पवित्रपाणि** वि. (तत्.) 1. हाथ में कुश रखने वाला 2. पवित्र हाथों वाला।

**पवित्रा** स्त्री. (तत्.) 1. तुलसी 2. एक नदी का नाम, प्राचीन नदी 3. हलदी 4. धार्मिक अनुष्ठानों या कृत्यों में पहनी जाने वाली रेशम के दानों से बनी माला।

**पवित्रात्मा** वि. (तत्.) 1. ऐसा मनुष्य जिसकी आत्मा पवित्र हो, शुद्धात्मा 2. शुद्ध अंतःकरण वाला।

**पवित्रारोपण** पुं. (तत्.) 1. यज्ञोपवीत धारण करना 2. भक्तों द्वारा विष्णु आदि देवताओं को

यज्ञोपवीत पहनाया जाना, श्रावण शुक्ला द्वादशी को विष्णुमूर्ति को सोने, चाँदी या ताँबे का यज्ञोपवीत कराने की परंपरा है।

**पवित्रारोहण** पुं. (तत्.) दे. पवित्रारोपण।

**पवित्राश** पुं. (तत्.) सन का बना हुआ डोरा जो अत्यंत शुद्ध माना जाता है।

**पवित्रित** वि. (तत्.) पवित्र किया हुआ, शुद्ध या निर्मल किया हुआ।

**पवित्री** स्त्री. (तत्.) कुश का बना हुआ एक प्रकार का छल्ला या मुद्रिका जो कर्मकांड आदि के समय अनामिका में धारण किया जाता है, पैंती।

**पवित्रीकरण** पुं. (तत्.) पवित्र या शुद्ध करने की प्रक्रिया।

**पविधर** पुं. (तत्.) वज्र धारण करने वाला, इंद्र।

**पवीर** पुं. (तत्.) 1. हल की फाल 2. शस्त्र, हथियार 3. वज्र, पवि।

**पवेरना** स.क्रि. (देश.) छितराकर या बिखराकर बोना, जुते हुए खेत में बीज-वपन करना।

**पशम** स्त्री. (फा.) 1. मुलायम तथा बढ़िया ऊन (पंजाब, कश्मीर तथा तिब्बत की बकरियों के बालों की जड़ों के पास कुछ नरम और चिकने रोएँ होते हैं इन्हें ही पशम या पश्म कहा जाता है)।

**पशमीना** पुं. (फा.) 1. दे. पशम 2. पशम से बना हुआ मुलायम या बढ़िया कपड़ा या चादर।

**पशव्य** वि. (तत्.) 1. पशु संबंधी 2. पशुओं के लिए हितकर 3. नृशंस, क्रूर, पशुतापूर्ण (पशु) जैसा, पुं. पशुओं का झुंड।

**पशु** पुं. (तत्.) 1. चार पैरों से चलने वाला कोई पूँछवाला प्राणी, जानवर।

**पशुकर्म** पुं. (तत्.) 1. यज्ञ आदि में किया गया पशु का बलिदान 2. मैथुन, सम्भोग।

**पशुघात** पुं. (तत्.) यज्ञ पशु का वध, बलि के पशु का हनन।